Sign in to edit and save changes to this file.

आर.एन.आई.नं.- UPHIN/2009/44666

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

सत्ता एक्सप्रेस

डी.ए.वी.पी. नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त

वर्ष 12 अंक : 328 कानपुर देहात,सोमवार 13 सितम्बर 2021 Email: sattaexpress@rediffmail.com

बाजरे की फसल का समसामयिक प्रबंधन- डॉ हरीश चंद्र सिंह

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर देहात। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के बाजरा वैज्ञानिक डॉ हरीश चंद्र सिंह ने कृषकों को एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि अधिक बाजरे का उत्पादन और लाभ हेतु उन्नत तकनीक अपनाना आवश्यक है। डॉ सिंह ने बताया कि भारत विश्व का अग्रणी बाजरा उत्पादक देश है यहां लगभग 85 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में बाजरे की खेती की जाती है। जिसमें 87: क्षेत्र राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश में है। उन्होंने बताया कि देश के शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रों में

यह प्रमुख खाद्य फसल है और साथ ही पशुओं के पौष्टिक चारा उत्पादन के लिए भी बाजरे की खेती की जाती है डॉ हरीश चंद्र सिंह ने बताया कि पोषण की दृष्टि से इस के दाने में अपेक्षाकृत अधिक प्रोटीन 10.8 से 14. 5: और वसा 0.4 से 8 : मिलती है। वही कार्बोहाइड्रेट, खनिज तत्व, कैल्शियम, कैरोटीन, राइबोफ्लेविन, विटामिन बी2 और नाइसीन, विटामिन बी6 भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। गेहूं एवं चावल की अपेक्षा इस में लौह तत्व भी अधिक होते हैं उन्होंने बताया कि अधिक ऊर्जा मान के कारण इसे सर्दियों में खाना अधिक पसंद किया जाता है। उन्होंने बताया कि भारत में कुल बाजरे का क्षेत्रफल लगभग 95: असिंचित है उन्होंने कृषकों को सलाह दी है कि वर्षा ना होने के कारण भूमि में नमी बनाए रखें। डॉ सिंह ने कहा कि सितंबर माह में बाजरे की फसल में लगभग बालियां निकलने लगती हैं जिसमें रोगों का प्रकोप अधिक होता है इनका समय से प्रबंधन करना उचित रहता है उन्होंने बताया कि मृदुरोमिल आशिता रोग बालियों पर दानों के स्थान पर छोटी–छोटी हरी पत्तियां उग जाती हैं इसकी रोकथाम हेतु 0. 35: कॉपर ऑक्सिक्लोराइड का परणीय छिड़काव कर दें। दूसरे रोग के लिए बताया कि अरगट रोग लगता है जो बालियों में शहद जैसा चिपचिपी बूंदे दिखाई देती हैं इसके नियंत्रण के लिए खड़ी फसल में बावस्टीन 0.1: का दो तीन बार परणीय छिड़काव कर दें।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress

WORLD ख़बर EXPRESS

WORLD ख़बर एक्सप्रेस

अंक :3

12 सितंबर 2021, रविवार www.worldkhabarexpress.media MID DAY E-PAPER www.worldkhabarexpre

बाजरे के अच्छे उत्पादन के लिए अपनाएं उन्नत तकनीक

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डीआर सिंह की ओर से जारी निर्देश के क्रम में विवि के बाजरा वैज्ञानिक डॉ. हरीशचंद्र सिंह ने किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। इसमें बताया कि अधिक बाजरे के उत्पादन और लाभ के लिए उन्नत तकनीक अपनानी होगी। डॉक्टर सिंह ने बताया कि भारत विश्व का अग्रणी बाजरा उत्पादक देश है। यहां लगभग 85 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में बाजरे की खेती की जाती है। इसमें 87 प्रतिशत क्षेत्र राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा और उत्तर प्रदेश का है। उन्होंने बताया कि देश के शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रों में यह प्रमुख खाद्य फसल है और साथ ही पशुओं के पौष्टिक चारे के लिए भी यह खेती की जाती है। डॉ. हरीशचंद्र सिंह ने बताया कि गेहूं एवं चावल की अपेक्षा इसमें लौह तत्व अधिक होते हैं। अधिक ऊर्जा मान के कारण सर्दियों में खाना पसंद किया जाता है। उन्होंने सलाह दी है कि भूमि में नमी बनाए रखें। सितंबर में बाजरे की फसल में बालियां निकलने लगती हैं। इस दौरान रोगों का प्रकोप अधिक होता है। इनका समय से प्रबंधन करना उचित रहता है। इसकी रोकथाम के लिए 0.35 प्रतिशत कॉपर ऑक्सिक्लोराइड का छिड़काव कर दें।

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • सोमवार • 13 सितम्बर • 2021

गेहूंच्चावल के मुकाबले ज्यादा पोषक हैं बाजरे के दाने

कानपुर (एसएनबी)। वाजरे का दाना गेहूंच्चावल के मुकावले ज्यादा पोषक है। यही कारण है कि सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि कुपोषण की समस्या दूर करने को वाजरे की खेती प्रोत्साहित करने में जुटा है। वाजरा देश के शुष्क व अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों में जहां एक प्रमुख खाद्य फसल है, वहीं पशुओं के लिए पौष्टिक चारा उत्पादन के लिए भी वाजरे की खेती की जाती है।

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के वाजरा वैज्ञानिक डॉ. हरीश चन्द्र सिंह का कहना है कि पोषण की दृष्टि से वाजरे के दाने में अपेक्षाकृत अधिक प्रोटीन 10.8 से 14.5 प्रतिशत और वसा 0.4 से 8 प्रतिशत तक मिलती है। कार्वोहाइड्रेट, खनिज तत्व, कैल्शियम, कैरोटीन, राइवोफ्लेविन, विटामिन वी 2, नाइसीन व विटामिन वी 6 भी इसमें प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। गेहूं एवं चावल की अपेक्षा इसमें लौह तत्व भी अधिक होते हैं। उन्होंने वताया कि अधिक ऊर्जा मान के कारण इसे सर्दियों में खाना अधिक पसंद किया जाता है।

डॉ.सिंह ने वताया कि भारत विश्व का अग्रणी वाजरा उत्पादक देश है। यहां लगभग 85 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में वाजरे की खेती

बाजरे के अधिक उत्पादन के लिए उन्नत तकनीक अपनायें किसान : डॉ. हरिश्चन्द्र सिंह

की जाती है। इसमें 87 प्रतिशत क्षेत्र राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा व उप्र में है। भारत में कुल वाजरे का क्षेत्रफल का लगभग 95 प्रतिशत असिंचित है। उन्होंने कृषकों को वर्ष न होने के कारण भूमि में नमी वनाये रखने का सुझाव दिया है। सितंवर माह में वाजरे की फसल में लगभग वालियां निकलने लगती हैं, जिसमें रोगों का प्रकोप वहुत अधिक होता है। रोग नियंत्रण के लिए जरूरी दवाओं का छिड़काव किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि अधिक वाजरे का उत्पादन और लाभ के लिए उन्नत तकनीक को अपनाना आवश्यक है।

सीएसए के न्यूट्री स्मार्ट विलेज एवं एग्री स्टार्टअप के कार्यों की महानिदेशक ने की प्रशंसा

कर्म कसौटी साप्ताहिक

कानपुर। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ त्रिलोचन महापात्रा ने विश्वविद्यालय के 9 भवनों (प्रशासनिक भवन कृषि विज्ञान केंद्र कानपुर देहात, कन्नौज एवं फर्रुखाबाद तथा मिनी सीड हब इकाई फतेहपुर,सौर ऊर्जा सब्जी अनुभाग कल्याणपुर, तथा आईसीटी प्रयोगशाला, सीड टेस्टिंग प्रयोगशाला, ऑटोमेटिक वेदर स्टेशन एवं सेंटर फॉर इन्क्यूबेशन एंड इन्नोवेशन टू एग्री स्टार्टअप) का ऑनलाइन लोकार्पण किया। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह द्वारा विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण एवं अग्रणी कार्यों की प्रगति रिपोर्ट रखते हुए महानिदेशक एवं अतिथियों का स्वागत किया। विश्व विद्यालय में बीएससी (कृषि) अंतिम वर्ष के तीन छात्रों कार्तिकेय किशोर वर्मा,शिवम तिवारी, मनीष पांडे द्वारा प्रारंभ किए गए एग्री स्टार्टअप का प्रस्तुतीकरण किया गया। जिसमें श्री कार्तिकेय किशोर वर्मा द्वारा फिटबिट स्टार्टअप नामक अपना स्टार्टअप शुरू किया। जिसमें पोषक तत्व, मिनरल्स एवं विटामिंस तथा स्वास्थ्य से भरपूर विभिन्न प्रकार के सलादों को ऑनलाइन डिलीवरी हेतु तैयार किया है। मिस्टर कार्तिकेय अपनी पढ़ाई के साथ–साथ इसी स्टार्टअप में तीन अन्य लोगों को भी रोजगार दे रहे हैं भविष्य में इसे प्रदेश एवं देश के विभिन्न भागों में लोगों तक पहुंचा कर स्वास्थ्यवर्धक सलाद उपलब्ध कराने का विचार है। शुभम तिवारी एवं मनीष पांडे ने इनडोर एयर प्यूरीफायर प्लांट से संबंधित ग्रीन रेजिडेंट नामक एग्री स्टार्टअप प्रारंभ किया है। महानिदेशक के समक्ष अपने प्रस्तुतीकरण में शुभम ने बताया कि जब मैंने कानपुर में प्रवेश किया तो इस शहर में वायु प्रदूषण से मेरा सामना हुआ। और जब मुझे यह पता चला कि कानपुर देश के प्रदूषित शहरों में से एक है।तो इस प्रदूषण को कम करने का मेरे मन में विचार आया। उसी समय मैंने नासा की एक रिपोर्ट पढ़ी जिसमें बताया गया कि आउटडोर प्रदूषण से अधिक इंडोर प्रदूषण खतरनाक होता है इसको कम करने के लिए मैंने अपने स्टार्टअप के द्वारा इंडोर प्लांट जो वायु प्रदूषण को कम करने वाले होते हैं उन को शामिल किया। उन्होंने बताया कि वह 3 जनपदों में इंडोर प्लांट सप्लाई कर रहे हैं तथा ₹43000 की आमदनी भी प्राप्त हो रही है।महानिदेशक ने छात्रों द्वारा प्रस्तुत एग्री स्टार्टअप की प्रशंसा करते हुए इसे देश के अन्य विश्वविद्यालयों के लिए एक उदाहरण बताते हुए स्टूडेंट स्टार्टअप को आगामी कुलपतियों के सम्मेलन में रखने हेतु उप

महानिदेशक(शिक्षा)डॉ आर सी अग्रवाल को निर्देश दिए हैं। इस कार्य हेतु कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह की बहुत ही सराहनीय की। विश्वविद्यालय द्वारा जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में कराए जा रहे कायी जिनमें 25 न्यूट्री गार्डन तथा कुपोषण मुक्त बनाए जाने की भी प्रशंसा की। साथ ही विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2020– 21 में उत्कृष्ट शोध कार्यों के प्रकाशन में वृद्धि के साथ उच्च नास रेटिंग में प्रकाशन के लिए बधाई दी। महानिदेशक डॉ त्रिलोचन महापात्रा ने विश्वविद्यालय में कराए जा रहे अनुसंधान एवं प्रसार तथा शिक्षण गतिविधियों में हो रही अग्रतर बढ़ोतरी की जानकारी लेते हुए आशा की है कि निकट भविष्य में यह विश्वविद्यालय देश के प्रथम 5 विश्वविद्यालयों में स्थान अवश्य बनाएगा। इस मौके पर उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा) डॉक्टर आरसी अग्रवाल ने भी विश्वविद्यालय में किए जा रहे कास्ट एनसी परियोजना के कार्यों की प्रशंसा की। कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों को धन्यवाद निदेशक शोध डॉ एच जी प्रकाश ने दिया। जबकि कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर श्वेता यादव ने किया। इस अवसर पर डॉक्टर विजय कुमार यादव, निदेशक प्रसार/ समन्वयक डॉक्टर एके सिंह, डॉ खलील खान सभी डीन, अधिकारी, वैज्ञानिक एवं छात्र उपस्थित रहे।

ign in to edit and save changes to this file.

जन एक्सप्रेस
/janexpresslive
लखनऊ, सोमवार, 13 सितम्बर, 2021, वर्ष : 12, अंक : 325, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹3.00/-
लखनऊ तथा देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | www.janexpresslive.com/epaper

उन्नत तकनीक अपनाकर बढ़ाया जा सकता बाजरे का उत्पादन और लाभ

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डी. आर सिंह द्वारा जारी निर्देश क्रम में रविवार को विश्वविद्यालय के बाजरा वैज्ञानिक डॉ. हरीश चंद्र सिंह ने किसानों को एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि उन्नत तकनीक अपनाकर बाजरे का उत्पादन और लाभ बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि भारत विश्व का अग्रणी बाजरा उत्पादक देश है यहां लगभग 85 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में बाजरे की खेती की जाती है। देश के शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रों में यह प्रमुख खाद्य फसल होने के साथ ही पशुओं के पौष्टिक चारा उत्पादन के लिए भी इसकी खेती की जाती है। डॉ.हरीश ने बताया कि पोषण की दृष्टि से इसके दाने में अपेक्षाकृत अधिक प्रोटीन 10.8 से 14.5 फीसदी और वसा 0.4 से 8 फीसदी पाई जाती है। बाजरे में कार्बोहाइड्रेट, खनिज तत्व, कैल्शियम, कैरोटीन, राइबोफ्लेविन, नाइसीन, विटामिन बी6 प्रचुर मात्रा में होने के साथ गेहूं और चावल की अपेक्षा इसमें लौह तत्व भी अधिक होते हैं। उन्होंने बताया कि भारत में कुल बाजरे का असिंचित क्षेत्रफल लगभग 95 फीसदी है। उन्होंने किसानों को बताया कि सितंबर माह में बाजरे की फसल में लगभग बालियां निकलने लगती हैं जिसमें रोगों का प्रकोप अधिक होता है इनका समय से प्रबंधन करना चाहिए इसके साथ ही उन्होंने किसानों को बाजरे में लगने वाले रोगों के बारे में जानकारी दी।